ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

ओ३म् क्रतो स्मर ।

वर्ष–6, अंक–10 | जून 2013 | ज्येष्ठ

सृष्टि संवत् 1960853114 | विक्रमी संवत् 2070 | दयानन्दाब्द 190

विद्वान् मनुष्यों को उचित है कि सब मनुष्यों के लिए ब्रह्मविद्या और पदार्थ विद्या और बुद्धि की शिक्षा करके निरन्तर रक्षा करें और वे रक्षा को प्राप्त हुए मनुष्य परमेश्वर वा विद्वानों के उत्तम उत्तम प्रिय कर्मों का आचरण किया करें ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

यजुर्वेद भावार्थ 4.11

सम्पादक

मूलचन्द गुप्त

ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी–1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली–110045

ओ३म्

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

• *परामर्श*

डॉ० धर्मपाल आर्य
(पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)
ए/एच-16, शालीमार बाग,
दिल्ली-110088
दूरभाष-011-27472014
011-27471776

• *सम्पादक*

मूलचन्द गुप्त
(पूर्व प्रधान आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली)

• *प्रकाशक*

मूलचन्द गुप्त,
अध्यक्ष, **ओम्-प्रतिष्ठान**
कुसुमालय, बी-1/27,रघुनगर,
पंखा रोड, नई दिल्ली-110045
दूरभाष-9650886070
011-25394083

ई-मेल-Ompratisthan@gmail.com

ओ३म्-सुप्रभा में प्रकाशित लेखों के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है । वे विचार लेखक के अपने हैं ।

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं० 17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया । न्यायक्षेत्र-दिल्ली

उद्देश्य

✧ वैदिक सभ्यता, संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता का पोषण करना, वैदिक विचार-धारा के अनुसार मानव-निर्माण करना, समरस और समेकित समाज का संगठन करना, विश्व भर में सुख और शान्ति की स्थापना करने का प्रयास करना **ओम्-प्रतिष्ठान** का मुख्य उद्देश्य है ।

✧ इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए समय समय पर विभिन्न बहुआयामी गतिविधियों का संचालन किया जाएगा ।

✧ रचनात्मक और प्रेरक साहित्य का सृजन, प्रकाशन और प्रसारण का, इन गति-विधियों में प्रमुख स्थान होगा ।

✧ इस पत्रिका में समय-समय पर आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनैतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक, नैतिक, वैश्विक चेतना जागृत करने से सम्बन्धित विषयों पर मौलिक लेख तथा समाचार प्रकाशित किए जायेंगे ।

✧ **ओ३म्** परमपिता परमात्मा का निज नाम है । परमात्मा इस सृष्टि का नियन्ता है । सृष्टि से सम्बन्धित सभी विषयों का इसमें समावेश किया जाएगा ।

✧ **ओ३म्-सुप्रभा** का प्रकाशन पूर्णतया निजी स्तर पर किया जा रहा है । उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु प्रति मास देश-विदेश के आर्य विद्वानों, लेखकों, उपदेशकों, कार्यकर्ताओं, प्रकाशकों एवं संस्थाओं को ओ३म्-सुप्रभा **निःशुल्क** भेजी जा रही है।

✧ लघु-पत्रिका के कारण, प्रकाशनार्थ लेख न भेजें ।

✧ सुधी पाठकों से निवेदन है कि वे अपने सुझाव भेजकर कृतार्थ करते रहें ।

ओ३म्-सुप्रभा

वैदिक सभ्यता-संस्कृति तथा राष्ट्रीय एकता की पोषक पत्रिका

रचना, स्थिति और प्रलय, कर्मों का फल जिस का विधान है ।
ओ३म् सुप्रभा ज्ञान अनुपम, सुरभित जिस से जन कुसुम प्राण है ।।

वर्ष–6, अंक–10 | जून 2013 | ज्येष्ठ
सृष्टि संवत् 1960853114 | विक्रमी संवत् 2070 | दयानन्दाब्द 190

ओ३म्–महिमा

इतिहास पुराणं पुष्पं ता अमृता आपः

–महात्मा नारायण स्वामी

अथ येऽस्योदञ्चोरश्मयस्ता एवास्योदीच्यो मधुनाड्योऽथर्वाङ्गिरस एव मधुकृत इतिहास पुराणं पुष्पं ता अमृता आपः ॥

ते वा एतेऽथर्वाङ्गिरस एतदितिहासपुराणमभ्यतपं स्तस्याभितप्तसय यशस्तेज इन्द्रियं वीर्य्यमन्नाद्यं रसोऽजायत ॥

तद्व्यचक्षरत्तदादित्यमभितो ऽश्रयत्तद्वा एतद्यदेतदादित्यस्यपरं कृष्णं रूपम् ॥

छान्दोग्य उपनिषद् 3.4.1–3

अर्थ–और जो इस (आदित्य) की उत्तर ओर की किरणें हैं वे ही इसकी उत्तर ओर की मधु नाड़ियां है । अथवा अंगिरस की शहद की मक्खियां हैं । इतिहास पुराण फूल हैं और वे अमृत रस पूर्ण हैं ॥

निश्चय उस इस अथर्वाङ्गिरस ने इतिहास पुराण (रूप फूल) को तपाया । उसके तपने से यश, तेज इन्द्रिय बल और खाद्य अन्नरूप रस उत्पन्न हुआ ।

वह झरने लगा और उसने आदित्य का सब ओर से आश्रय लिया । निश्चय वह यह है जो यह आदित्य का अत्यन्त कृष्ण रूप है । ●

ओ३म् महिमा

ओ३म् ही है मेरी माता, ओ३म् ही हैं मेरे पिता ।
ओ३म् हैं मेरे सम्बन्धी, ओ३म्मय मम तेजस्विता ॥

मम शरीरे अस्ति ओ३म्-बिया, वही करता मम प्रसन्न हिया ।
उसने मम हित सब कुछ किया, सब कुछ उसने ही मुझे दिया ॥

सूर्य उसका दे रहा यहां, संजीवनी-सी आतप मुझे ।
चन्द्र उसका दे रहा दिव्य, अमृतमयी चांदनी मुझे ॥

धरित्री उसकी दे रही धैर्य, बादल दे रहे दान-भाव ।
अनुशासन सिखा रहा सूर्य, मिल रहा मुझे उत्तम स्वभाव ॥

समुद्रों से अहा ! गम्भीरता, मिल रही मुझे निशिदिन यहां ।
रे दर्पण सिखा रहा मुझे, स्पष्ट कहना सबसे यहां ॥

मेरा 'ओ३म्' अभय का दाता, धर्मप्रकाशक मेरा ओ३म् ।
'धर्मराज' कहलाता ओ३म्, अत्यन्त प्रिय है मुझे ओ३म् ॥

धर्मात्माओं-मुमुक्षुओं को है प्रसन्न करता मेरा ओ३म् ।
ओ३म् का नाम है, अस्तु, "प्रिय", कामनायोग्य है मुझे ओ३म् ॥

है 'ओ३म्' ही मम परम-आत्मा, मेरे निकटतम तो है वही ।
वह व्यापक मम आत्मा में भी, उससे अलग मैं हूं ही नहीं ॥

—प्रियवीर हेमाड़ना
मो० : 7503070674

उपकर्तुमप्रकाशं क्षन्तुं न्यूनेष्वयाचितं दातुं
अभिसन्धातुं गुणैः, शतेषु केचिद्विजानन्ति ॥

चुपचाप उपकार करना, कमजोरों पर क्षमा करना,
बिना मांगे देना, गुणों के कारण मेल करना
इत्यादि बातों को सौ में से कोई जानता है ।

ओ३म सुप्रभा का जून 2013 का अंक सुधी पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए, हमें हार्दिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है । इस अंक में हमने यथापूर्व **'स्मरण-अनुकरण-नमन'** तथा **'आर्यसमाज :·चिन्तन-अनुचिन्तन'** के अन्तर्गत विद्वानों के सामयिक लेख दिए हैं । **'जन्मशती स्मरण'** के अन्तर्गत प्रो० इन्द्रदेव सिंह आर्य का संक्षिप्त परिचय दिया है । श्री भगवान् दास जी सुकवि हैं । उनके महाकाव्य 'दयानन्द सागर' के कुछ अंश प्रस्तुत किए हैं । स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती, महात्मा वेदभिक्षु के दो प्रेरक लेख हमने दिए हैं । इन्द्र स्वामी 'इन्द्रकवि' का परिचय हमने अप्रैल के अंक में दिया था । वे शतायु हो गए हैं । कुछ समय से अस्वस्थ हैं । हम उनके स्वास्थ्य की कामना करते हैं । इसी जून मास में पं० चमूपति जी, पं० गणपति शर्मा तथा पं० राम प्रसाद 'बिस्मल' का निधन हुआ था । पं० तुलसीराम स्वामी, श्री चान्दकरण शारदा, लाला देशबन्धु गुप्त और शहीद रामनाथ का जन्म भी इसी जून मास में हुआ था । हम उनका सश्रद्ध स्मरण करते हैं तथा उनके प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं ।

आर्यसमाज की एकता और आर्यसमाज का आन्दोलन

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आरम्भिक काल से ही समाज में व्याप्त कुरीतियों, अन्धविश्वासों, ढोंग-पाखण्डों को समाप्त करने का सफल प्रयास प्रारम्भ कर दिया था । उन्होंने अनेक शास्त्रार्थ किए तथा विपक्षियों को मुंह तोड़ जवाब दिया । काशी शास्त्रार्थ प्रसिद्ध है जहां पर उन्होंने अनेक धर्म-धुरन्धरों को धूल चटाई थी । वह युग शास्त्रार्थ का युग था । महात्मा अमरस्वामी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के तथा अन्य आर्य विद्वानों के द्वारा किए गए शास्त्रार्थों को संकलित एवं प्रकाशित किया था । वे स्वयं शास्त्रार्थ महारथी थे। उनकी मान्यता थी कि शास्त्रार्थ का अभ्यास बना रहना चाहिए । यदि कोई अन्य मतावलम्बी शास्त्रार्थ के लिए सामने नहीं आता तो आर्यसमाज को ही विद्यालयों की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं की भांति दो पक्ष बना लेने चाहिए। एक पूर्व पक्ष हो और दूसरा उत्तर पक्ष । पूर्व पक्ष प्रश्न पूछे अपनी शंकाएं प्रस्तुत करें तो उत्तर पक्षवार विद्वान् उनका तर्क पूर्ण, शास्त्र सम्मत उत्तर दे । ये शास्त्रार्थ खुले में होने चाहिए जिससे सभी को आर्य सिद्धान्तों का ज्ञान हो सके । महात्मा प्रेमभिक्षु ने इस परम्परा में पुस्तकें लिखी थीं । पं० रामचन्द्र 'देहलवी' के प्रश्न और उत्तर इतने सटीक होते थे कि विपक्ष उनके सामने टिक ही नहीं पाता था । आज भी हमारे बीच में अनेक विद्वान् हैं । वे

इस परम्परा को आगे बढ़ा सकते हैं । पिछले दिनों रोहतक में जो कुछ हुआ, वह बहुत दुखद है । हमें अपने सिद्धान्तों के प्रचार में ढील नहीं करनी चाहिए और जो हमारे ऊपर आरोप लगाए उसका मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए । सत्यार्थप्रकाश के ऊपर अनेक बार प्रतिबन्ध लगाने की बात उठी परन्तु विपक्षी सदा ही धराशायी हुए आर्यसमाज के सिद्धान्तों में कोई कमी निकाल ही नहीं सकता । वे सार्वभौमिक है तथा सर्वहितकारी हैं । इसका एक दुखद पहलू यह भी है कि आर्यसमाज संभवतः पूर्व की भांति एक जुट नहीं है । हैदराबाद सत्याग्रह में सारा आर्यसमाज एक था । सिंध आन्दोलन के समय यही स्थिति थी । पंजाब के हिन्दी आन्दोलन के समय भी सभी एक साथ थे । गौरक्षा आन्दोलन में तो आर्यसमाज के साथ अन्य अनेक संगठन भी थे । सती प्रथा के विरोध में भी सभी साथ थे । धर्मरक्षा महभियान के समय भी सभी एक साथ थे । आर्यसमाज तो वास्तव में आन्दोलन का ही नाम है । आर्यसमाज इतना सशक्त होना चाहिए कि कोई उसकी ओर उंगली उठाने का साहस न कर सके और यह तभी होगा जब सारा आर्यजगत् एक साथ होगा । हमारे पास स्वामी श्रद्धानंन्द, पं० लेखराम, पं० गुरुदत्त विद्यार्थी, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती सदृश अनेक सुधी विद्वानों की विरासत है । हमारे पास महाशय राजपाल की विरासत है जिन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना धर्म की रक्षा की । सामाजिक कुरीतियाँ तो लगातार घटने के स्थान पर बढ़ रही हैं । कहने को तो हमारा देश अध्यात्म का देश है पर यहां अनावश्यक 'कर्मकाण्ड' पर बल दिया जा रहा है । ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना के स्थान पर कर्मकाण्ड हावी है । आधुनिक वैज्ञानिक सोच का भी उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं । पिछले दिनों एक पूजनीय बकरा संचार माध्यमों से दिखाया गया । भारत में इस प्रकार की नौटंकी चलती रहती है पढ़े लिखे लोग भी इस प्रकार की बातों पर विश्वास करते हैं । प्रेम, शान्ति, करुणा, आनन्द-आत्मिक गुण हैं । इनका संवर्धन होना चाहिए । आडम्बरों और ढोंगों का नहीं । अभी एक लेख प्रकाशित हुआ था 'क्या आर्यसमाज थम गया है ।' आर्यसमाज को समाज सुधार, शिक्षा प्रसार, नारी सशक्तीकरण, सामाजिक न्याय, सामाजिक समरसता, मूल्य आधारित नैतिकता का प्रचार प्रसार आदि कार्य करने चाहिए । आओ इस पर विचार करें । आर्यसमाज तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार पर बल दें । सारा संसार भारत की ओर आशा की टकटकी लगाए देख रहा है । वह वेद के निर्भ्रान्त ज्ञान को प्राप्त करना चाहता है । वेद के मार्ग पर चलाना चाहता है, पर चलाए कौन? यह आर्यसमाज कर सकता है यह सब होगा जब हम एक जुट होंगे । आपस के भेदभाव भुलाकर एक हो जाएंगे आओ सत्य को जीवित रखने के लिए सब मिलकर संघर्ष करें ।

—सम्पादक

धर्म और राजनीति

–स्व० स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसावृताः ।
तांस्ते प्रेत्यामि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः॥ यजु-40/3

महर्षि दयानन्द ने राजनीत को धर्म का एक अंग माना है । व्रे लिखते हैं कि जीवन की तरह शासन सम्बन्धी प्रत्येक कार्य और व्यवहार में भी धर्म को मुख्यता दी जानी चाहिए । जब तक राजनीति या शासन पद्धति में धर्म की प्रधानता न होगी तब तक यथार्थ सुख व शान्ति का उदय नहीं हो सकता । वास्तविक सद्भावना और समृद्धि की कभी आशा नहीं की जा सकती । विधान या दण्ड व्यवस्था का प्रभाव तो शरीर अथवा बाह्य जीवन तक ही सीमित रहता है । कानूनों के द्वारा सजा देकर न्यायालय शान्ति तथा व्यवस्था स्थापित करने का जितना ही प्रयत्न करते है, अशान्ति और अपराध करने की प्रवृत्ति उतनी ही बढ़ती जाती है। इसके अतिरिक्त यह भी बात है कि वैधानिक पाश अर्थात् कानूनी शिकंजों में थोड़े से ही अपराध आ पाते हैं । शेष तो छल-छद्म या तिकड़म द्वारा अपनी सांसारिक विकृतियों को बनाए रखते हैं। न्यायालय द्वारा दण्डित होकर जिन अपराधियों को कारागार जाना पड़ा है वे वहां अन्य अपराधियों के कुसंग में पड़कर सुधरते तो नहीं वरन् अभ्यस्त और अनुभवी अपराधी बन कर निकलते हैं । वहां उन्हें अपराध-प्रवृत्तियों की अधिकाधिक प्रेरणा और शिक्षा मिलती है । दण्ड विधान से बचने तथा पुलिस की पकड़ में न आने के सफल एवं सिद्ध साधन सिखाए जाते हैं । वे नए-नए अनुभव लेकर बाहर आते हैं । यही कारण है कि एक अपराधी दण्ड भोगकर भी अपराध करता है और बार-बार जेल जाता है । अधिक धूर्त या प्रपंची हो जाने के कारण पुलिस भी उस पर हाथ नहीं डाल पाती । अभिप्राय यह है कि कोरा कानून अपराध रोकने में सफल नहीं होता क्योंकि उसमें हृदय परिवर्तन के लिए स्थान नहीं ।

राजनैतिक सत्ता के समर्थक लोग मत सम्प्रदायों की बड़ी कड़ी आलोचना करते हैं । इन्हें सारे उपद्रवों और लड़ाई झगड़ों का मूल कारण बताते हैं । इसमें अधिक सत्य अवश्य है । मत, सम्प्रदाय या मजहब के कारण बड़े बड़े अनर्थ और उपद्रव हुए हैं । परन्तु यह और भी कटु सत्य है कि धर्महीन राजनीति विश्व का विनाश करने में बहुत आगे रही है । संसार के दोनों गत महायुद्धों के आधार विशुद्ध राजनैतिक स्वार्थ था । उनमें मत, सम्प्रदाय या मजहब का नाम को भी सरोकार न था । ऐसी दशा में यह क्यों

न कहा जाए कि मत सम्प्रदायों से भी भयानक और संहारक रूप धर्महीन राजनीति का है ऐसी राजनीति द्वारा जितने अनर्थ, अनाचार रक्तपात और संहार हुए उतने अन्य प्रकार नहीं हो पाए। हम पूछते हैं कि धर्म ने कब अनर्थ किए ? कितने नरसंहार और कहां कहां प्रहार कराए ? धर्म के कारण कोई युद्ध हुआ तो बतांइए ? धर्म तो युद्धों का अन्त कर शान्ति प्रसार करता है।

राजनीति, मत-सम्प्रदाय या मजहब से तो दूर रखी जानी चाहिए परन्तु धर्म से उसकी पृथकता कैसे सम्भव हो सकती है। धर्म तो विश्व भर के लिए हैं। धर्म के अटल सिद्धान्तों का खण्डन कभी कोई व्यक्ति समुदाय या राष्ट्र नहीं कर सकता है । धर्म-तत्व से अलग रहकर शासन-सत्ता स्वार्थान्ध उच्छृंखल और भ्रष्ट बन जाती नहीं। कैसे आश्चर्य की बात है कि एक ओर तो शासन की ओर से कहा जाता है कि:-सदाचारी, नैतिक, सच्चे और ईमानदार बनो। सत्य और अहिंसा को जीवन का लक्ष्य बनाओ। दूसरी ओर धर्म को धता बताई जाती है। धर्म-निरपेक्षता का ढिंढोरा पीटा जाता है। मानो धर्म की परिभाषा और उसका स्वरूप सत्य, न्याय, अहिंसा, अस्तेय, आदि से भिन्न हो। धर्म को मत-सम्प्रदाय मानकर उसका बहिष्कार कर देना कहां का न्याय है। यह कौन सी परिभाषा है जिसमें धर्म को संकीर्ण संकुचित या सम्प्रदाय बताया गया है । शास्त्र में स्पष्ट कहा है-"**यतोऽभ्युदय-निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः**" जिसमें लोक और परलोक दोनों की सिद्धि होती है यही धर्म है। अभ्युदय का अर्थ है लौकिक उन्नति और निःश्रेयस-पारलौकिक उन्नति और मोक्ष का नाम है अर्थात् जिन नियमों या सिद्धान्तों का अनुसरण करने से लोक-परलोक (दीन-दुनियां) दोनों की उन्नति हो सके वे ही धर्म हैं।

य एव श्रेयस्करः स एव धर्मशब्देनोच्यते (मीमांसा 1/2 सूत्र भाष्य) जो कुछ कल्याणकारी है वही धर्म शब्द में समाविष्ट होता है। उसी को धर्म कहते हैं। और भी कहा है-

आर्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्राविरोधिना
यस्तंर्केणनु सन्धत्ते स धर्म वेद नेतरः ।

जो व्यक्ति ऋषि-मुनियों के धर्माधार उपदेश का वेद-शास्त्र के अविरोधी तर्क द्वारा अनुसंधान करते हैं , वे ही धर्म को जानते हैं, अन्य लोग नहीं। मीमांसाकार फिर कहते हैं:-

विहित क्रिया साध्यः धर्मःपुंसोगुणो मतः

अर्थात् विहित क्रिया द्वारा साध्य पुरुष का जो गुण है वही धर्म है। महर्षि जैमिनी ने "**चोदना दक्षणोऽर्थो धर्मः**" सूत्र द्वारा निर्देश किया है कि आचार्य या वेद द्वारा प्रेरित होकर, सत्कर्म में प्रवृत्त होना ही धर्म है।

महाभारत में भगवान् वेद व्यास ने भी बताया है जो धारण करता है उसे धर्म कहते हैं । धर्म प्रजाओं को और मनुष्यों को धारण करता है । जिस नियम या सिद्धांत में जीवन को उठाने का गुण है उसे ही धर्म कहना चाहिए ।

उपर्युक्त पंक्तियों में धर्म की जो सुन्दर और सुबोध परिभाषा या व्याख्या की गई है उसमें कहीं भी एक देंशीय संकीर्णता, विशिष्टता या साम्प्रदायिकता का अभाव भी नहीं मिलता । ये परिभाषाएं भारत ही नहीं, .विश्व भर के लिए माननीय हैं । उन पर कोई आपत्ति या शंका-संदेह नहीं कर सकता । मत सम्प्रदाय तो परम्परागत है जो किसी भी समय परिवर्तित और विकृत हो सकते हैं । ऐसे सीमित और संकीर्ण सम्प्रदाय या मत को शाश्वत, अटल और अक्षुण्ण समझना भयंकर भूल है । उससे भी अधिकतर भयंकर भूल है–मत सम्प्रदाय अथवा मजहब के लिए "धर्म" शब्द प्रयोग करना या धर्म के स्थान पर अंग्रेजी शब्द 'रिलीजन' शब्द रखना । ऐसा करके संतोष की सांस लेनेवाले 'धर्म' शब्द का घोर अपमान करते हैं । खेद है कि आधुनिक राजनीति में धर्म का यही अशुद्ध और अनुचित अर्थ किया जा रहा है ।

धृतिः क्षमा दमो ऽ स्तेयं शोचमिन्द्रियनिग्रहः
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।

वस्तुतः धर्म मनुष्य को मनुष्य बनाता है । मनुष्यता नष्ट हो जाने से ही विश्व अनर्थ का केन्द्र बन जाता है । कोई व्यक्ति कितना ही विद्वान्, धनवान्, बलवान्, लेखक, वक्ता, नेता, कवि, साहित्यकार क्यों न हो यदि वह मनुष्य नहीं है, धार्मिक नहीं है तो संसार के लिए वह अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता । फिर राजनीति ही धर्म को धता बता कर लोक कल्याणकारिणी कैसे बन सकेगी ? **"न मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित्"** । मनुष्यता से बढ़कर संसार में कोई भी वस्तु नहीं है । अतएव सब को पहले मनुष्य और पीछे अन्य कुछ बनने की आवश्यकता है । धर्म ही है जो मनुष्य में मनुष्यता के भाव भरता और उसे सत्य, न्याय, सदाचार, अहिंसा, स्नेह आदि सद्गुणों की ओर ले जाता है । धर्म के बिना राजनीति अपूर्ण और लंगड़ी है ।

हमारा निश्चित मत है कि यदि विश्व में सच्ची शान्ति और सुव्यवस्था करनी है तो धर्म के मूल और शाश्वत तत्वों को राजनीति अथवा शासन विधान में सम्मिलित करना होगा । इसके बिना किसी राष्ट्र की अवस्था तथा व्यवस्था नहीं सुधर सकती और न वह सुख-समृद्धि सम्पन्न ही बन सकता है। "रामराज्य का अर्थ है शासन सत्ता में धर्म का संयोग और सहयोग ।" ऐसा करने से शासन तथा शासित अथवा राजा और प्रजा दोनों धार्मिक बनकर विश्व में सच्ची सुख शान्ति की विमल वर्षा करेंगे और उसे समृद्धिशाली बनाएंगे । ●

स्वामी जी द्वारा मधुर सामगान

था स्वर स्वामी का मधुर-सौम्य, कोकिल-कूजन सी श्रेष्ठतान ।
बोले इक दिन सब सत्संगी, महाराज सुनाओ सामगान ॥
कर मान सभी का स्वामी ने, कर दिया साम आलाप शुरू ,
था गान एक अमृत वर्षा, हो गये विमोहित सभी प्राण ॥

निस्तब्ध मौन सुन रहे सभी, विस्मृत हो गये सकल मन-तन ।
लग रहे सभी मोहित-मन्त्रित, प्रतिभा-सम दीख रहे सब जन ॥
बन गया गीतमय सुपरिवेश, सुधि जो बैठे खग-मृग-मधुकर,
हो गये बन्द जब ऋषि के स्वर, स्वर रहा रमा प्रकृति के कण-कण ॥

राव कर्णसिंह का कोप, तलवार के दो टुकड़े

सुन राव महाशय हुए कुपित, बोले निज खड्ग हाथ लेकर ।
'बोलो निज गिरा सम्भाल सन्त, थे शस्त्र सुसज्जित दर्जन चर ॥
थे टीकाराम सभीत बहुत, ऋषि बोले–'डरते क्यों प्रियवर,
हमने जो कहा सत्य ही है, मत किसी बात की करो फिकर ॥

थे राव कर्ण अतिशय क्रोधित, आंखों में शोणित रहा उतर ।
चेहरा हो गया रक्तरंजित, मुख से अपशब्द रहे थे झर ॥
हंसकर बोले ऋषिराज–'राव ! गर शास्त्र-समर चाहो करना,
बुलवालो रंगाचार्य जी को, कर लो संकल्प आज जी-भर ॥

जो हारे वह स्वीकार करे, सिद्धान्त विपक्षी का समुचित ।
पर राव कोप में बर्राते, सर्वथा शब्द बोले अनुचित ॥
थी तर्कहीन उसकी वाणी, बढ़ रहा खड़क पर कर प्रति क्षण,
हंसकर बोले ऋषिराज–'राव ! सब शक्ति खड्ग में नहीं निहित ॥

है करना यदि शास्त्रार्थ तुम्हें, लो बुला गुरु को शास्त्र-समर ।
यदि करना है शस्त्रार्थ समर, है बहुत गर्व निज शक्ती पर ॥
जा भिड़ो जोधपुर-जयपुर से, हो जाए अनुभव ताकत का,
क्यों टकराते सन्यासी से, है अपना शस्त्र ज्ञान-अक्षर ॥

खो बैठे आपा राव कर्ण, अपशब्द-अग्नि का किया वार ।
कर खड्ग हस्त लपके ऋषि पर, बढ़ रहा तीव्र तलवार-ज्वार ॥
ऋषिवर ललकारे–'अरे धूर्त !' कह दिया ढकेल धरातल पर,
फिर उठा संभल, ऋषि के ऊपर, करने वाला ही था प्रहार ॥

कर खड्ग हस्त, कर दिया पस्त, करके निरस्त्र पटका भू-पर ।
पुनि पकड़ मूठ, बल दे अटूट, कर दिये टूक, फेंका खंजर ॥
ऋषि पकड़ हाथ बोले उससे, क्या कर प्रहार ले लूं बदला,
हूं सन्यासी, ना करूं वार, तुझसे दानव से मैं चिढ़कर ॥

देश की दीन दशा—कफन तक उतार लिया

थे यती-तपी-त्यागी ऋषिवर, पहने थे एक वस्त्र निज तन ।
हो घोर शीत-गर्मी-वर्षा, था एकमात्र कौपीन वसन ॥
मच गई धूम उस मेले में, यश फैल रहा था दिग्-दिगन्त्,
डिग रही आस्था प्रतिमा से, कर रहे लोग गंगा-अर्पण ॥

थे कोमल दीन-दयालु ऋषी-दुखियों के दुःख से जाये पिघल ।
लख रहे प्रकृति के दृश्य, देखते गंगाजल पावन निर्मल ॥
आई माता ले शिशु का शव, हो गई प्रविष्ट गंगजल में,
लिया कफन तार, रो रही नार, फेंका जल में हो रही विह्वल ॥

धोलिया कफन, ढांपा निज तन, जा रही विलखती अपने घर ।
यह देख दृश्य, धृति हुई नश्य, ऋषिनेत्र अश्रु से हो गये तर ॥
सोचा निज मन, इतना निर्धन, हो गया आज यह आर्य राष्ट्र,
कर जल-विलीन, शव-वस्त्र हीन, माता ने पहना वही वस्त्र ॥

यह है भारत, पतली हालत, निर्धनता का नंगा-दर्शन ।
सुत से बढ़कर ना कोई रुचिकर, क्या करे बचा ना कुछ साधन ॥
की घोर प्रतिज्ञा स्वामी ने, बोलूंगा जन भाषा में ही,
जनता के दुख निवारण में, कर दूंगा निज जीवन अर्पण ॥

—**भगवानदास, 9213494923**

आर्य साहित्यसेवी विश्वकोश

दस खण्डों में प्रस्तावित 'आर्यसाहित्य सेवी विश्वकोश' का लेखन कार्य प्रगति पर है । सुविज्ञ पाठकों से विनम्र निवेदन है कि यदि उन्होंने अपना परिचय, चित्र तथा लेखन-कार्य का विवरण अभी तक नहीं भेजा है, तो कृपया अपना परिचय शीघ्र भेजें जिसमें नाम, चित्र, माता-पिता का नाम, पति/पत्नी का नाम, जन्मस्थान और जन्म तिथि (निधन स्थान और निधन तिथि केवल दिवंगत के लिए), जीवन के उल्लेखनीय प्रसंग, लेखन कार्य का विस्तृत परिचय आदि कृपया शीघ्र भेजें । *—सम्पादक*

प्रो० इन्द्रदेव सिंह आर्य

आपका जन्म मध्यप्रदेश के होशंगाबाद में नर्मदा तीरे में 27 जून सन् 1913 को हुआ। आपके पिता का नाम ठाकुर शेरसिंह था, जिन्होंने साहित्य रत्न कर, वहां की राज्यकीय प्राथमिक शाला में अध्यापन का कार्य किया था। आपकी माता का नाम श्रीमती मोहरबाई था। उनका निधन तब हो गया था, जब आप मात्र 5 वर्ष के थे। एक बार पिता जी को पागल सियार के काटे जाने पर कसौली (शिमला) के अस्पताल में इलाज कराना पड़ा। देवयोग से इनके साथ के कमरे में आये महाशय प्रतिदिन सन्ध्या, हवन तथा महर्षि के ग्रन्थों का अध्ययन करते थे। पिता इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने घर वापिस आते ही वैदिक यन्त्रालय, अजमेर से महर्षि का साहित्य मंगाना आरम्भ कर दिया। फलस्वरूप इनके पिता दृढ़ आर्यसमाजी हो गये। इस प्रकार आपके पिता ने आपको वैदिक धर्म और संस्कृत में शिक्षित करने हेतु गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली में प्रविष्ट करा दिया। आपने कुछ समय गुरुकुल कुरुक्षेत्र में भी अध्यापन किया। पिताजी के बार बार स्थानान्तर होने से आपको भिन्न जगहों के विद्यालयों में अध्ययन करने का अवसर मिला। नागपुर विश्वविद्यालय से आपने एम०एस०सी० (रसायन शास्त्र) तथा एल०एल०बी० कर कुछ वर्ष वकालत भी की। 1939 में आपका विवाह श्रीमती चन्द्रकला देवी के साथ हुआ। सन् 1940 में जब विद्यार्थी थे, तब आपके पिता ठाकुर शेर सिंह "आर्य सेवक" आर्य पत्रिका के सम्पादक थे।

सन् 1943 में पिता की मृत्यु के पश्चात् आपको ही 'आर्य सेवक' का सम्पादक बना दिया गया और आपने 1951 तक सफलता पूर्वक सम्पादन किया। 1948-49 में आप आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री बने। उस काल में आपने सभा भवन के लिए भूमि व बाद में सभा भवन बनवाने में महत्वपूर्ण सहयोग किया। आप अनेक कॉलेजों में प्राध्यापक रहे। दिल्ली में वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी (विज्ञान) रहकर परिभाषिक रसायन कोश का सम्पादन किया। इसी समय आप आर्यसमाज सोहनगंज दिल्ली के प्रधान भी रहे। सेवा निवृत्ति के पश्चात् पुनः नागपुर जाकर वेद-प्रचार कार्य किया तथा 'आर्यसेवक' का सम्पादन सम्भाला। इस प्रकार आपने विभिन्न अवसरों पर लगभग तीन दशकों तक सम्पादन का कार्य किया। इसके अतिरिक्त आपने "आर्यसमाज की हिन्दी सेवा" पुस्तक भी लिखी।

क्या आर्यसमाज थम गया है ?

–राजकुमार हिरणवाल

[आर्यसमाज भारत के प्राचीन गौरव को पुनर्स्थापित करने के लिए कमर कस कर आगे बढ़ा था...जिस चिर निद्रा को तोड़ने का कार्य आर्यसमाज ने किया, शायद ही कोई संस्था कर पाए...फिर क्या बात है जो कश्मीर और पूर्वोत्तर के ज्वलंत प्रश्न पर आर्यसमाज चुप है...क्या आतंकवाद की दारूण व्यथा से आर्यसमाज का हृदय नहीं दुखता...? आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर चिन्तन कर रहे हैं-राजकुमार हिरणवाल –सम्पादक]

आर्यसमाज का जन्म उस कालखण्ड में हुआ था जिस समय में भारतीय संस्कृति पर मृत संस्कृति होने का आरोप यूरोप वाले लगा रहे थे । हिन्दू धर्म को घटिया बताया जा रहा था । ब्रिटिश सरकार ने देश को आर्थिक रूप से खोखला करके रख दिया था । भारतीयों में हीन भावना भरी जा रही थी । यूरोप के कई लेखक भारत के निवासियों में यह कहकर फूट डाल रहे थे कि भारत में विभिन्न जाति के लोग रहते हैं । भारत में एक जाति के लोग नहीं रहते, बल्कि विभिन्न काल खण्डों से बाहर के लोगों ने बसकर उसे राष्ट्र के रूप में विकसित किया है । ऐसे समय में भारत का आत्म विश्वास कहां साथ दे सकता था ? क्योंकि चारों ओर से अज्ञानता, मूर्तिपूजा ने भारत के मानस पर विकृति उत्पन्न कर डाली थी । देश के पढ़े-लिखे लोग भी ईसाई बनने लगे थे । सारा पंजाब प्रांत मुसलमान बनने जा रहा था । देश के तथाकथित ब्राह्मण दूध की खीर खाकर मटरगश्ती कर रहे थे । इन सब विक्षोभों को दूर करने के लिए आर्यसमाज ने भारत में जन्म लिया । आर्यसमाज भारत के प्राचीन गौरव को पुनः स्थापित करने के लिए कमर कसकर आगे बढ़ा था । इसने भारत माता के आंसुओं को पोंछने का संकल्प लिया था । अंग्रेज सरकार के विरोध में आर्यसमाज ने युवकों को मातृभूमि पर बलिदान होने की भावना भरने के लिए पाठशालाएं खोलीं । धार्मिक उन्नति तथा वैज्ञानिक कसौटी पर किसी बात को कसकर चलाना सर्वप्रथम भारतीयों को आर्यसमाज ने ही सिखाया । जितने बड़े पैमाने पर दुनिया की समस्त बुराइयों का विरोध इस संस्था ने किया, इतना किसी संस्था ने नहीं किया । वेद की तर्कसंगत ऋचाओं को सत्य सिद्ध करके आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने सारे देश के युवकों को पढ़ने-पढ़वाने का संकल्प करवाया था । आर्यसमाज ने वैदिक यंत्रालय खोले । अज्ञानता के अंधकार को पुनः गुरुकुलों ने दूर भगाया । सारे उत्तर भारत में दयानन्द एंग्लो वैदिक विद्यालय खोले-जिनका आज भी जाल बिछता जा रहा है । जिस चिर निद्रा को तोड़ने

का कार्य आर्यसमाज ने किया, शायद ही कोई संस्था कर पाए । सही रूप में देखो तो कांग्रेस का निर्माण भी आर्यसमाज ने ही करवाया था । आर्यसमाज के हरेक सम्मेलन, छोटी बड़ी सभाओं, गोष्ठियों में साधु-संन्यासी प्रजा से कांग्रेस को समर्थन देने की बात कह रहे थे । यही नहीं आर्यसमाज ने देश को उच्च कोटि के क्रांतिकारी दिए, जिन्होंने देश को मुक्त कराने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया । अमर स्वतंत्रता सेनानी लाला लाजपत राय आर्यसमाज की ही देन थे । भाई परमानन्द, सरदार भगत सिंह, और रामप्रसाद 'बिस्मिल' आर्यसमाज ने ही तैयार किए थे आर्यसमाज ने ईसाई मिशनरियों के छक्के छुड़ाए थे । उन्हें शास्त्रार्थ के लिए ललकारा था । बाइबिल की वैज्ञानिक ढंग से जैसी तर्कसंगत आलोचना आर्यसमाज के संस्थापक ने लिखी थी, ऐसी ही आलोचना उत्तरोत्तर आर्यसमाज ने की । हिन्दू समाज से मूर्तिपूजा को बाहर निकालने का काम सर्वप्रथम आर्यसमाज ने व्यापक रूप से आरम्भ किया । धर्म में विज्ञान का सम्मिश्रण किया । जगह जगह पर अणु, परमाणु, तत्व, पदार्थ, रसायनों का जिक्र आर्यसमाज ने अपने व्याख्यानों में अब से एक शताब्दी पूर्व किया था । गणित को सर्वप्रथम वेदों से भारतीयों ने सीखा-ऐसा शंखनाद आर्यसमाज ने किया । किस बल पर आर्यसमाज ने यह सब दिया ? आर्यसमाज में क्या नयापन था जो वह इतने बड़े पैमाने पर मूर्खों से लड़ने का बीड़ा चबाकर अंध महासमर में कूद पड़ा था ? आर्यसमाज भारत के प्राचीन यशोगान में क्यों लग गया था ? यदि इन प्रश्नों पर हम ठीक से विचार करें, तो वास्तव में भारत के अलावा इतना सद्, दृढ़ सत्याचरण भरा अतीत किसी अन्य राष्ट्र के पास था ही नहीं । न ही वेद के बराबर ज्ञान-विज्ञान बिखेरने वाली पुस्तक अन्य देशों के विद्वानों/महापुरुषों ने पढ़ी थी । कुरान, पुराण, बाइबिल दुनिया में ज्ञान विज्ञान के प्रसार के लिए कभी आर्यसमाज को पूर्ण लगी ही नहीं । उनमें वास्तव में वेदों की तरह-गणित, भूगोल, वास्तुकला, संगीत के सुर, परमात्मा और उसके निराकार, सर्वनियंता, दयालु, महान्, अजन्मा आदि उत्कृष्ट सिद्धान्त है ही नहीं । वास्तव में वेद ही भारत में पुर्नजागरण का काम कर सकते थे ।

समाज में फैली बुराईयों से भी आर्यसमाज ने लोहा लिया । जाति प्रथा, विधवा, छुआछूत आदि बुराइयों का विरोध बहुत साहस के साथ आर्यसमाज ने किया, लड़कियों को शिक्षित करने, अपनी पसंद का जीवनसाथी चुनने का अधिकार देने की बात सर्वप्रथम आर्यसमाज ने उठाई । आर्यसमाज ने इस देश को नए मजबूत हाथ-पैर दिए, नई आंखें और नई चेतना दी, दृढ़ जिह्वा दी । आर्यसमाज ने ही निजाम हैदराबाद को झुकाया था, न कि गृहमंत्री पटेल

(शेष पृष्ठ 16 पर)

पुस्तक समीक्षा–

डॉ० वेदप्रकाश का वैदिक साहित्य

विद्यार्थी जीवन—इस पुस्तक में सुधी विद्वान् लेखक डॉ० वेदप्रकाश ने विद्यार्थियों के करणीय कार्य बताए हैं ईश्वर प्रार्थना, स्वास्थ्य प्राप्ति, वेशभूषा, अध्ययन, अनुशासन, सद्व्यवहार, सदाचार, स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वसंस्कृति से प्रेम, अन्ध विश्वास और पाखण्ड आदि विषयों का विद्यार्थियों की दृष्टि से विवेचन किया गया है। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए विद्यार्थियों का जीवन एवं व्यवहार कैसा हो, इस पर प्रकाश डाला गया है। आर्ष ग्रन्थों की सूक्तियों द्वारा पुस्तक और भी उपयोगी बन पड़ी है।

पञ्चयज्ञ महिमा—इस काव्य में सुधी विद्वान् ने पञ्च महायज्ञों की महिमा का गायन किया है।

पञ्चयज्ञ सब करो-कराओ।
मानव जीवन सफल बनाओ॥

दयानन्द महिमा—विद्वान्, कवि ने इस पुस्तक में महर्षि दयानन्द सरस्वती के उदात्त चरित्र तथा सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक क्षेत्र में किए गए उल्लेखनीय कार्य का काव्यात्मक शैली में वर्णन किया हे। इसमें 105 पद हैं। इसे पढ़कर गाकर, सुनकर और सुनाकर हम ऋषिवर के महान् कार्यों को जानेंगे तथा स्वयं भी करने का प्रयास करेंगे।

दुःखों से मुक्ति—सुधी विद्वान् ने दुःखों से मुक्ति का समाधान इस पुस्तक में दिया है। इसका एकमात्र उपाय ईश्वर की उपासना और वेदज्ञान के अनुसार आचरण करना है। आपसी सद्भाव और सौमनस्य सम्मान का व्यवहार हमें दुःखों से छुटकारा दिलायेगा।

आर्यसमाज महिमा—वैदिक विद्वान् ने इस पुस्तक में आर्यसमाज की महिमा का गायन किया है।

ओ३म् चालीसा, ईश्वर चालीसा, वेद चालीसा, भक्ति चालीसा, यज्ञ चालीसा, शिव चालीसा, राम चालीसा, हनुमान चालीसा, कृष्ण चालीसा, दयानन्द चालीसा।

इन दस लघु पुस्तकों में वैदिक विद्वान् ने प्रत्येक में चालीस पदों में ओ३म्, ईश्वर, वेद, भक्ति, यज्ञ, शिव, राम, हनुमान, कृष्ण, दयानन्द, के महत्व का गायन किया है। ये सभी पुस्तकें गेय हैं, सुबोध, सरल, भाषा-शैली

इनकी विशिष्टता है ।

भारत की वर्तमान दुर्दशा और हमारा कर्तव्य—सुधी लेखक ने इस लघु पुस्तिका में भारतवर्ष की वर्तमान राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, दुर्दशा का सटीक चित्रण किया है । वे केवल समस्या ही प्रस्तुत नहीं करते, अपितु उसका समाधान भी साथ ही साथ देते हैं । यह उनके चिन्तन का वैशिष्टय है । उन्होंने बताया कि इस दुर्दशापूर्ण समस्या से छुटकारा पाने का एक मात्र उपाय है, वेद और आर्यसमाज के सिद्धान्तों के अनुरूप जीवन-व्यवहार । आर्यसमाज विश्व का सर्वोत्तम धार्मिक और सामाजिक संगठन है । यही सर्वोत्तम देशभक्त एवं धर्मरक्षक संगठन है । 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को क्रियान्वित करना ही हमारा सदुद्देश्य होना चाहिए । केवल जय बोलने से कुछ नहीं होगा, हमें कर्मशील बनना होगा । सम्पूर्ण देश में फैला आर्यसमाज अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर भारतवर्षोन्नति कर सकता है । राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र कल्याण के लिए सर्वस्व समर्पण आवश्यक है ।

उपर्युक्त पुस्तकों की विषय वस्तु को देखते हुए, यह कहना होगा कि प्रो० वेदप्रकाश जी वैदिक सिद्धान्तों से अनुप्राणित है तथा राष्ट्रकल्याण के लिए कार्य करने के लिए सनद्ध हैं । ●

(पृष्ठ 14 का शेष)

ने । आर्यसमाज के भजनोपदेशकों ने तो सेना के जवानों को देशभक्ति के गीत सुनाकर दुश्मन के छक्के छुड़ाने के लिए प्रेरित किया था । आर्यसमाज ने संकट के समय तन-मन-धन से देश को अपना योग दिया । उज्जवल भविष्य की मजबूत अधारशिला दी । तब क्या कारण है जो वर्तमान बुरे हालात में आर्यसमाज ने अपनी जीभ को लगाम दे रखी है ? क्या वर्तमान में आर्यसमाज के शाश्वत सिद्धान्त ठंडे हो गए ? क्या आर्यसमाज महर्षि दयानन्द के साथ विश्वासघात नहीं कर रहा ? यदि ऐसा नहीं है तो वह कश्मीर, पूर्वोत्तर, नक्सल प्रभावित क्षेत्रों और आतंकवाद के नाम पर हो रहे अत्याचारों पर क्यों अपनी आवाज बुलन्द नहीं करता ? क्या आर्यसमाज की भूमिका समाप्त हो गई ? आर्यसमाज ने भारत में **ही नहीं**, दुनिया भर में सत्य का प्रचार करने का, दरिद्र नारायण की सेवा का वचन दे रखा है । पर आज आर्यसमाज चुप है, देश पाखंडियों के इशारे पर चल रहा है, सब ओर विधर्मी हिंसा कर रहे हैं, निर्दोषों की हत्या से भारत माता का आंचल रक्तिम हो रहा है ।

—सत्यचक्र (सा०) से साभार

आर्य विद्वानों के सत्परामर्श–

● "तम की छाती को चीर नित्य होते प्रभात की तरह "ओ३म्-सुप्रभा" प्राप्त हो रही हैं, तदर्थ धन्यवाद । यह आपके औदार्य ऋषि चेतना से अनुप्राणित तप आर्यत्व का दिव्य प्राण प्रकाश है । जो हम सौभाग्यवान (अभागों को) भी सहज निःशुल्क मिल रहा है"

–आर्यकवि, लाखन सिंह भदौरिया "सौमित्र"
भोजपुरा, मैनपुरी, उ० प्र०-205001

● 'ओ३म सुप्रभा' हर महिने प्राप्त होती है । छोटी सी पत्रिका में भारी जीवन उपयोगी ज्ञान भर देते हैं, यानी गागर में सागर समा देते हो । पुराने अर्थात् जिनको हमने देखा नहीं ऐसे विद्वान् लेखकों का परिचय व उनके विचार पढ़कर मन हर्षित हो जाता है । लाला चतुरसेन गुप्त जी का जीवन चरित्र पढ़ कर कर्मठता की शिक्षा मिलती है । "ओ३म् सुप्रभा" प्रकाशित करके आप वैदिक धर्म का उत्तम प्रचार कर रहें हैं ।

–देवराज आर्यमित्र,
WZ-428 हरिनगर, नई दिल्ली-110064

● "ओ३म् सुप्रभा" गत छः वर्षों से प्रति माह, नियमित रूप से मिल रही है । जबकि वार्षिक तथा आजीवन सदस्यता लेने पर भी अनेक आर्य पत्रिकाएं नियमित रूप से नहीं मिलती ।

आपकी पत्रिका से अनेकों भूले-बिसरे पुराने आर्य-विद्वानों के परिचय तथा उनके लेख पढ़ने को मिलते हैं । आप कहां से और कैसे इस असंभव कार्य को संभव करते हैं-देखकर आश्चर्य होता है । "ओ३म् सुप्रभा" के सभी अंकों को मैं संजोकर रख रहा हूं ।

–रामसिंह शर्मा (पूर्व मन्त्री, आर्यसमाज सदर बाजार, दिल्ली)
इन्दिरापुरम, गाजियाबाद, उ० प्र०

● आप द्वारा भेजी जा रही ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद, आध्यात्मिक मासिक पत्रिका 'ओ३म सुप्रभा' नियमित रूप से मिल रही है । ज्ञानवर्धक, सामयिक विषयों पर दिवंगत आर्य विद्वानों के मननीय लेख तथा अन्य सभी रचनाएं पत्रिका को चार चाँद लगाने वाली होती हैं । लाजबाब पत्रिका के लिए हार्दिक बधाई ।

–प्रो० शामलाल कौशल
ग्रीन रोड, रोहतक (हरियाणा)

● 'ओ३म सुप्रभा' में प्रकाशित सभी सामग्री बड़े ध्यानपूर्वक पढ़ता हूं तथा लगभग पूरी पत्रिका में निशान (अण्डरलाईन) लगाकर रखता हूं । पत्रिका में प्रस्तुत सुझाव तथा लेख अनुकरणीय होते हैं ।

–मदनचन्द आर्य, पटेल नगर, गुड़गांव (हरियाणा)

● पत्रिका 'ओ३म सुप्रभा' निरन्तर प्राप्त हो रही है । पत्रिका है तो अत्यन्त लघु आकार में, परन्तु उपयोगिता की क्या कहूं । वास्तव में अन्धकार के बीच में एक विद्युत की किरण की भांति कौंध जाती है । ऋषिवर देव दयानन्द के दीवानों ने जिस साहस, त्याग, तप, बलिदान एवं श्रद्धा से आर्यसमाज के पवित्र ठोस एवं अनुकंरणीय कार्य को गति दी, वह तो है ही परन्तु पत्रिका में उसका व्याख्यान हृदय को कहीं बहुत गहराई तक स्पर्श कर जाता है ।

● नवम्बर 2012 अंक पढ़ा और उसमे शामली निवासी पं० श्री रामेश्वराचार्य शास्त्री एम० ए० काव्यतीर्थ का लेख मिट्टी को भी नरेश बनाने में निपुण लाला चतुरसेन गुप्त को पढ़ते समय आंखे कितनी बार सजल हुई पता नहीं । परन्तु लेख सच में अनन्तर तक झकझोर कर चला गया । लाला चतुरसेन सदी के अद्वितीय श्रद्धावान् अब क्यों नहीं दिखाई देते । लाला जी संस्तुति करते करते लेखक जो पौराणिक विचारधारा का होते हुए भी ऋषि की वेदना का कुछ तो अनुभव करता है, हम सभी के स्वार्थमय समर्पण से कहीं अधिक ऊंचा है । ठीक ही कहा है कि सत्य को किसी भी सम्प्रदाय या व्यक्ति की सीमा में नहीं बांधा जा सकता । वह तो सम्पूर्ण विश्व का एक ही होता है ।

ऐसे दीवानों की आशायें इस निराशा की घड़ी में आशा की प्रबल ज्योति जाग्रत कर जाती है ।

इस पत्रिका के माध्यम से अनेकों ऐसी घटनायें पढ़ने को मिलती है और पत्रिका का संग्रहणीय बना देती है ।

अभी पीछे के अंक में लगभग 6-7 अंक पूर्व वीर शिरोमणि श्रीयुत श्रद्धेय वीर सावरकर का लेख भी इसी प्रकार से शिराओं में उष्णता का प्रचार करने वाला था ।

रामफल सिंह आर्य
87/एस-3 कालोनी, सुन्दर नगर जि. भण्दी (हि०प्र०)

क्यों पूछ रहे मुझसे परिचय ?
मैं दीन कुटी का वह पंथी,
जिसकी पीड़ा ही चिर संगी,
जो सदा वियोगी रहा,
कभी पा सका न अपना स्वप्न-निलय ।
क्यों पूछ रहे मुझसे परिचय ?

—आचार्य पं० क्षेमचन्द्र 'सुमन'

आर्य संगठन

–स्व० महात्मा वेदभिक्षुः

[महात्मा वेदभिक्षुः, पं० भारतेन्दु नाथ का जन्म १४ मार्च १९२८ को कानपुर उत्तरप्रदेश में हुआ । आपने जनज्ञान प्रकाशन तथा दयानन्द संस्थान की संस्थापना की । आपने चारों वेदों का भाष्य अत्यल्प मूल्य पर आर्य जनता को उपलब्ध कराया । आपकी शिक्षा गुरुकुल जेहलम में हुई । आपने आर्य, आर्यमित्र, आर्योदय, आर्यमर्यादा, तथा जनज्ञान आदि पत्रों का संपादन किया । आपने वैदिक अर्थशास्त्र, विश्व को आर्यसमाज का संदेश, महर्षि दयानन्द चित्र दर्शन, दयानन्द चित्रकथा आदि ग्रन्थ लिखे । आपने जनज्ञान में धारावाहिक रूप से 'मैं हृदय मंदिर से लिख रहा हूं ।' के अन्तर्गत अनेक प्रेरणाप्रद लेख लिखे । प्रस्तुत लेख जनज्ञान, ज्येष्ठ २०३५ से लिया गया है । यह लेख आज भी आर्यसमाज के लिए प्रासंगिक है ।–सम्पादक]

संगठन ही शक्ति है, विघटन मृत्यु है, इसलिए आओ, सारे विवाद, स्वार्थ जलाकर सब एकता की डोर में बंध जाएं ।

हमारा लक्ष्य एक हो, हमारा कर्म एक हो, मंजिल एक हो, मार्ग एक हो, तो फिर धरती पर कौन हमारे समक्ष सक्षम होगा ।

स्वार्थ हम सभी का है, ऋषि दयानन्द का काम । इस स्वार्थ के लिए हमारा संघर्ष हो, विजय हमारी वन्दना करेगी ।

ग्रामों तक पहुंचो, घरों में पहुचो और जला दो वह सब कुछ, जो हानिप्रद है, अधर्म है, पाप है ।

आत्मा को ज्योतिर्मय बनाओ, प्राणों को दीप्त करो, संध्या से, प्रभु मिलन से शक्ति प्राप्त कर नयी परम्पराएं स्थापित करो ।

क्रान्ति के लिए, परिवर्तन के लिए, उमंग, उत्साह और साहस से अपना अभिषेक करो । मस्तक पर तिलक लगा प्रखरभाव से आगे आओ ।

हमारा जीवन अल्प समय के लिए है । यह देह सदा नहीं रहेगी, इसलिए इसके मोह में पड़ जीवन को नष्ट मत करो ।

प्यार, एकता, संगठन और लक्ष्यसिद्धि के लिए क्रान्ति, समग्र क्रान्ति आमूल परिवर्तन करने का व्रत लेकर "ओ३म्" ध्वज संभालो ।

असुरों का संहार और देवों की रक्षा हमारा धर्म है । पाखंडों पर प्रहार हमारा कर्तव्य है । अज्ञान का विध्वंस हमारा जीवन है ।

आपकी आत्मा को जगाना चाहता हूं । आपके मानस को उठाना चाहता हूं । आपकी घृणा और द्वेष को स्वयं पीकर आपके मन में प्यार की गंगा बहाना चाहता हूं ।

आपसे मुझे प्यार है, इसलिए आपसे कहता हूं कि आप भी सबसे प्यार करें। प्यार इतना बढ़े कि अनेकता का नाम भी कहीं न रह जाए।

देव दयानन्द का सपना आप ही तो पूरा करेंगे संगठित होकर।

शराब, भ्रष्टाचार, गुंडागर्दी, साम्प्रदायिकता इन चारों को मिटाने के लिए अब युद्ध की घोषणा करें। यह आर्यसमाज का सामाजिक कार्यक्रम है।

आर्य युवक जो राजनीति की बात करते हैं, वे वीर जो शासन में सुधार चाहते हैं, वे नौजवान जो क्रान्ति का सपना देखते हैं, समय की पुकार सुनें और सर्वत्र आर्य सेना सजाएं।

हम इन चार मूलभूत बुराइयों को जड़ से उखाड़ फेंकेंगे। इसके लिए हम शासन से भी लड़ेंगे और समाज विरोधी तत्वों से भी। मौत को गले लगाकर भी हम इन महानाशकारी जहरीले विषधरों को समाप्त करेंगे।

स्थान-स्थान पर "भारत रक्षा समितियां" बनायी जाएं। प्रबल प्रयत्न कर पूरे बल से इन चारों के विरुद्ध जनमत जागृत किया जाए। पोस्टर, प्रदर्शन, जलूस, सभाएं, सत्याग्रह सभी का प्रयोग इस अहिंसात्मक युद्ध में हम करेंगे।

हमें विश्वास है कि विजय हमारी होगी।

आर्य बन्धुओ! आर्यसमाज के अधिकारियों! हिन्दू संगठन के कर्णधारों सब एक होकर राष्ट्र रक्षा समितियों की स्थापना कर काम में लग जाओ।

परमपिता परमात्मा हमें शक्ति दे कि हम लक्ष्य पूर्ण कर धर्म की, सत्य की रक्षा कर सकें, सभी से आशीर्वाद मांग रहे हैं।

आर्यसमाज के अधिकारी सर्वत्र जनसभाओं की व्यवस्था करें। वर्ष में १२ जनसभाएं की जाएं जिनमें आर्यसमाज के आध्यात्मिक स्वरूप को प्रखर रूप से मुखरित किया जाए।

जन सभाओं पर व्यय कम से कम हो, जो भी व्यय हो वह प्रचार के लिए मनादी, इश्तिहार, स्टेज पर हो। वक्ताओं का प्रबन्ध यथासम्भव अपने समीप से किया जाए या प्रान्तीय सभाओं से सहयोग लिया जाए।

भवनों से बाहर निकलो, मैदान में आओ और युग को अपने साथ लेकर बढ़ने का संकल्प लो।

ऐसी अग्नि प्रज्वलित करो कि पाप-अधर्म, भ्रष्ट आचरण उसमें जल कर स्वाहा हो जाए।

कर्मक्षेत्र में क्रान्तिदूत बनकर आओ। धर्मक्षेत्र में विजय प्राप्त करो। जनता के मन तक पहुंचो। जनमानस का स्नेह सहयोग आपको अवश्य मिलेगा। ऐसा हमारा विश्वास है।

प्रकाशक-मुद्रक-स्वामी-मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित, तथा वैदिक प्रेस, 995/51, गली नं०17, कैलाशनगर, दिल्ली-31 (फोन-22081646) से मुद्रित कराकर, ओम् प्रतिष्ठान, कुसुमालय, बी-1/27, रघुनगर, पंखा रोड, नई दिल्ली- 45, से प्रकाशित किया। न्यायक्षेत्र-दिल्ली।